अंक -47 माह –फरवरी सत्र-२०२२-२०२३

उड़ान

भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर

एच-107,सैक्टर -12, नॉएडा

संत रविदास जयंती

गुरू रविदास का जन्म (रैदास) काशी में माघ पूर्णिमा दिन रविवार को संवत 1398 को हुआ था उनका एक दोहा प्रचलित है। चौदह सौ तैंतीस कि माघ सुदी पन्दरास। दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास। उनके पिता संतोख दास तथा माता का नाम कलसां ं देवी था। उनकी पत्नी का नाम लोना देवी बताया जाता है।[3] रैदास ने साधुसन्तों की संगति से -पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। वे जूते बनाने का काम किया करते थे औऱ ये उनका व्यवसाय था और अपनाकाम पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे और समय से काम को पूरा करने पर बहुत ध्यान देते थे। [4]संत रामानन्द के शिष्य बनकर उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित किया। संत रविदास जी ने स्वामी रामानंद जी को कबीर साहेब जी के कहने पर गुरु बनाया था, जबकि उनके वास्तविक आध्यात्मिक गुरु कबीर साहेब जी ही थे।[4] उनकी समयानुपालन की प्रवृति तथा मधुर व्यवहार के कारण उनके सम्पर्क में आने वाले लोग भी बहुत प्रसन्न रहते थे। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु सन्तों की सहायता करने-में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्राय : पिता उनसे अप्रसन्न रहते थे। कुछ -मूल्य लिये बिना जूते भेंट कर दिया करते थे। उनके स्वभाव के कारण उनके माता समय बाद उन्होंने रविदास तथा उनकी पत्नी को अपने घर से भगा दिया। रविदास पड़ोस में ही अपने लिए एक अलग इमारत बनाकर तत्परता से अपने व्यवसाय का काम करते थे और शेष समय ईश्वरसन्तों के -भजन तथा साधु-सत्संग में व्यतीत करते थे।उनके जीवन की छोटीछोटी घटनाओं से समय तथा वचन के पालन सम्बन्धी उनके गुणों -स्नान के ल-का पता चलता है। एक बार एक पर्व के अवसर पर पड़ोस के लोग गंगाािए जा रहे थे। रैदास के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले, गंगास्नान के लिए मैं अवश्य चलता किन्तु । गंगा स्नान के लिए -जाने पर मन यहाँ लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा ? मन जो काम करने के लिए अन्तकरण से तैयार हो वही : काम करना उचित है। मन सही है तो इसे कठौते के जल में ही गंगास्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है। कहा जाता है कि इस प्रकार के व्यवहार के बाद से ही कहावत प्रचलित हो गयी कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। -[5]

रैदास ने ऊँच-नीच की भावना तथा ईश्वर-भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया।

वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव-विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित-भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास

करने पर उन्होंने बहुत बल दिया। अपने एक भजन में उन्होंने कहा है-

कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै॥

उनके विचारों का आशय यही है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सफल रहता है जैसे कि विशालकाय हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है जबकि लघु शरीर की पिपीलिका इन कणों को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का (चींटी) भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है।

रैदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वतः उनके अनुयायी बन जाते थे।

उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति-भावना से बहुत प्रभावित हुईं और उनकी शिष्या बन गयी थीं।

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्यधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं।

रैदास के ४० पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन साहिब ने १६ वीं सदी में किया था ।

महाशिवरात्रि पर्व

महाशिवरात्रि भारतीयों का एक प्रमुख त्यौहार है। यूं तो शिवरात्री प्रत्येक माह की चतुर्दशी को आती है परंतु महाशिवरात्रि का इनमे विशेष स्थान है। यह भगवान **शिव** का प्रमुख पर्व है। **माघ फागुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को महाशिवरात्रि पर्व मनाया जाता है।** माना जाता है कि महाशिवरात्री की मध्य रात्रि को भगवान शिव प्रथम बार अपने साकार रूप **अग्निलिंग** (जो भगवान शिव का विशालकाय स्वरूप है) में प्रकट हुए थे, जिसका तेज करोड़ो सूर्य के समान था। सृष्टि की शुरुआत भी इसी दिन से मानी जाती हे । यह रात्रि आध्यात्मिकता के आधार पर काफी महत्वपूर्ण मानी जाती है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा होती हैं। यह पूजा वृत रखने के दौरान की जाती है। साल में होने वाली 12 शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है|

महाशिवरात्री को लेकर भारतवर्ष में एक भ्रांति फैली है जिसके अनुसार माना जाता हे की शिव पार्वती विवाह महाशिवरात्री को हुआ था परंतु

शिव पुराण के 35 वें अध्याय में रूद्र संहिता के अनुसार महर्षि वशिष्ठ ने राजा हिमालय को भगवान शिव और पार्वती विवाह के लिए समझाते हुए विवाह का मुहूर्त मार्गशीर्ष माह में होना तय किया था।

रूद्र संहिता के पार्वती खंड के श्लोक 58 , 61 में शिव पार्वती विवाह की तिथि का उल्लेख किया गया हे जिसके

अनुसार **शिव पार्वती विवाह तिथि...मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि** को आती है।

महाशिवरात्रि से सम्बन्धित कई पौराणिक कथाएँ है:

समुद्र मन्थन

समुद्र मंथन अमर अमृत का उत्पादन करने के लिए निश्चित था, लेकिन इसके साथ ही हलाहल नामक विष भी पैदा हुआ था। हलाहल विष में ब्रह्माण्ड को नष्ट करने की क्षमता थी और इसलिए केवल भगवान शिव इसे नष्ट कर सकते थे। भगवान शिव ने हलाहल नामक विष को अपने कण्ठ में रख लिया था। जहर इतना शक्तिशाली था कि भगवान शिव बहुत दर्द से पीड़ित हो उठे थे और उनका कंठ बहुत नीला हो गया था। इस कारण से भगवान शिव 'नीलकंठ' के नाम से प्रसिद्ध हैं। उपचार के लिए,वैद्यों ने देवताओं को भगवान शिव को रात भर जागते रहने की सलाह दी। इस प्रकार, भगवान शिव के चिन्तन में एक सतर्कता रखी। शिव का आनन्द लेने और जागने के लिए, देवताओं ने अलग-अलग नृत्य और संगीत बजाने। जैसे सुबह हुई, उनकी भक्ति से प्रसन्न भगवान शिव ने उन सभी को आशीर्वाद दिया। शिवरात्रि इस घटना का उत्सव है, जिससे शिव ने दुनिया को बचाया। तब से इस दिन, भक्त उपवास करते है।

छत्रपति शिवाजी जयंती

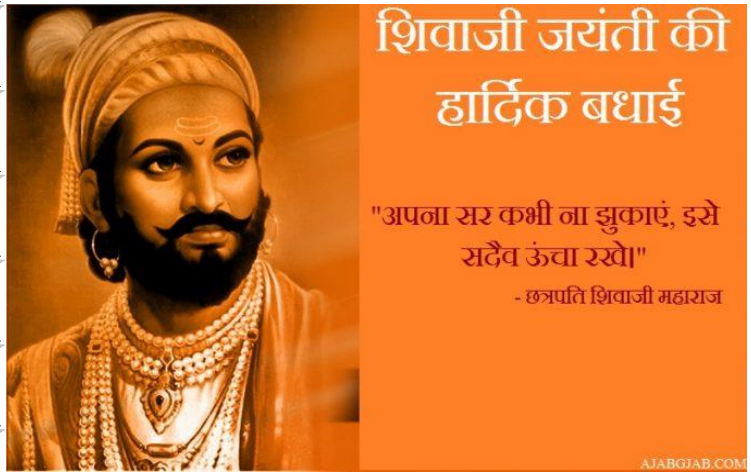

छत्रपति शिवाजी महाराज जयन्ती

भारतीय राज्य महाराष्ट्र का एक त्योहार और सार्वजनिक अवकाश है। यह त्यौहार 19 फरवरी (जूलियन तिथि के अनुसार), शिवाजी महाराज की जयंती, मराठा साम्राज्य के पहले छत्रपति और संस्थापक के रूप में मनाया जाता है।=छत्रपती शिवाजी महाराज ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों कि सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया। उन्होंने समर-विद्या में अनेक नवाचार किए तथा छापामार युद्ध (Guerilla Warfare) की नयी शैली (शिवसूत्र) विकसित की। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नायक के रूप में स्मरण किए जाने लगे। बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए शिवाजीराजे जन्मोत्सव की शुरुआत की।

मालोजीराजे भोसले (1552–1597) अहमदनगर सल्तनत के एक प्रभावशाली जनरल थे, पुणे चाकण और इंदापुर के देशमुख थे। मालोजीराजे के बेटे शहाजीराजे भी विजापुर सुल्तान के दरबार में बहुत प्रभावशाली राजनेता थे। शहाजी राजे अपने पत्नी जिजाबाई से शिवाजी का जन्म हुवा ।

छत्रपती शिवाजी महाराज ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों कि सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया। उन्होंने समर-विद्या में अनेक नवाचार किए तथा छापामार युद्ध (Guerilla Warfare) की नयी शैली (शिवसूत्र) विकसित की। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नायक के रूप में स्मरण किए जाने लगे। बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए शिवाजीराजे जन्मोत्सव की शुरुआत की।

रामकृष्ण परमहंस जयंती

मानवीय मूल्यों के पोषक संत रामकृष्ण परमहंस का जन्म १८ फ़रवरी १८३६ को बंगाल प्रांत स्थित कामारपुकुर ग्राम में हुआ था। इनके बचपन का नाम गदाधर था। पिताजी के नाम खुदीराम और माताजी के नाम चन्द्रा देवी था।उनके भक्तों के अनुसार रामकृष्ण के माता पिता को उनके जन्म से पहले ही अलौकिक घटनाओं और दृश्यों का अनुभव हुआ था। गया में उनके पिता खुदीराम ने एक स्वप्न देखा था जिसमें उन्होंने देखा की भगवान गदाधर (विष्णु के अवतार) ने उन्हें कहा की वे उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे। उनकी माता चंद्रमणि देवी को भी ऐसा एक अनुभव हुआ था उन्होंने शिव मंदिर में अपने गर्भ में रोशनी प्रवेश करते हुए देखा | इनकी बालसुलभ सरलता और मंत्रमुग्ध मुस्कान से हर कोई सम्मोहित हो जाता था।एक परम आध्यात्मिक संत थे।

सात वर्ष की अल्पायु में ही गदाधर के सिर से पिता का साया उठ गया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में पूरे परिवार का भरण-पोषण कठिन होता चला गया। आर्थिक कठिनाइयां आईं। बालक गदाधर का साहस कम नहीं हुआ। इनके बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय कलकत्ता (कोलकाता) में एक पाठशाला के संचालक थे। वे गदाधर को अपने साथ कोलकाता ले गए। रामकृष्ण का अन्तर्मन अत्यंत निश्छल, सहज और विनयशील थे। संकीर्णताओं से वह बहुत दूर थे। अपने कार्यों में लगे रहते थे।

सतत प्रयासों के बाद भी रामकृष्ण का मन अध्ययन-अध्यापन में नहीं लग पाया। १८५५ में रामकृष्ण परमहंस के बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय को दक्षिणेश्वर काली मंदिर (जो रानी रासमणि द्वारा बनवाया गया था) के मुख्य पुजारी के रूप में नियुक्त किया गया था। रामकृष्ण और उनके भांजे हृदय रामकुमार की सहायता करते थे। रामकृष्ण को देवी प्रतिमा को सजाने का दायित्व दिया गया था। १८५६ में रामकुमार के मृत्यु के पश्चात रामकृष्ण को काली मंदिर में पुरोहित के तौर पर नियुक्त किया गया।

रामकुमार की मृत्यु के बाद श्री रामकृष्ण ज़्यादा ध्यान मग्न रहने लगे। वे काली माता के मूर्ति को अपनी माता और ब्रह्माण्ड की माता के रूप में देखने लगे। कहा जाता हैं की श्री रामकृष्ण को काली माता के दर्शन ब्रह्माण्ड की माता के रूप में हुआ था। रामकृष्ण इसकी वर्णना करते हुए कहते हैं " घर ,द्वार ,मंदिर और सब कुछ अदृश्य हो गया, जैसे कहीं कुछ भी नहीं था! और मैंने एक अनंत तीर विहीन आलोक का सागर देखा, यह चेतना का सागर था। जिस दिशा में भी मैंने दूर दूर तक जहाँ भी देखा बस उज्ज्वल लहरें दिखाई दे रही थी, जो एक के बाद एक ,मेरी तरफ आ रही थी।रामकृष्ण परमहंस जीवन के अंतिम दिनों में समाधि की स्थिति में रहने लगे। अत: तन से शिथिल होने लगे। शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य पर ध्यान देने की प्रार्थना पर अज्ञानता जानकर हँस देते थे। इनके शिष्य इन्हें ठाकुर नाम से पुकारते थे। रामकृष्ण के परमप्रिय शिष्य विवेकानन्द कुछ समय हिमालय के किसी एकान्त स्थान पर तपस्या करना चाहते थे। यही आज्ञा लेने जब वे गुरु के पास गये तो रामकृष्ण ने कहा-वत्स हमारे आसपास के क्षेत्र के लोग भूख से तड़प रहे हैं। चारों ओर अज्ञान का अंधेरा छाया है। यहां लोग रोते-चिल्लाते रहें और तुम हिमालय की किसी गुफा में समाधि के आनन्द में निमग्न रहो। क्या तुम्हारी आत्मा स्वीकारेगी? इससे विवेकानन्द दरिद्र नारायण की सेवा में लग गये। रामकृष्ण महान योगी, उच्चकोटि के साधक व विचारक थे। सेवा पथ को ईश्वरीय, प्रशस्त मानकर अनेकता में एकता का दर्शन करते थे। सेवा से समाज की सुरक्षा चाहते थे। गले में सूजन को जब डाक्टरों ने कैंसर बताकर समाधि लेने और वार्तालाप से मना किया तब भी वे मुस्कराये। चिकित्सा कराने से रोकने पर भी विवेकानन्द इलाज कराते रहे। चिकित्सा के वाबजूद उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया।

बच्चों का कोना

कहानी

देवराज इन्द्र और धर्मात्मा तोते की यह कथा महाभारत से है।कहानी कहती है,अगर किसी के साथ ने अच्छा वक्त दिखाया है तो बुरे वक्त में उसका साथ छोड़ देना ठीक नहीं।

एक शिकारी ने शिकार पर तीर चलाया। तीर पर सबसे खतरनाक जहर लगा हुआ था।पर निशाना चूक गया।तीर हिरण की जगह एक फले-फूले पेड़ में जा लगा।पेड़ में जहर फैला।वह सूखने लगा।उस पर रहने वाले सभी पक्षी एक-एक कर उसे छोड़ गए।पेड़ के कोटर में एक धर्मात्मा तोता बहुत बरसों से रहा करता था। तोता पेड़ छोड़ कर नहीं गया,बल्कि अब तो वह ज्यादातर समय पेड़ पर ही रहता।दाना-पानी न मिलने से तोता भी सूख कर काँटा हुआ जा रहा था।बात देवराज इन्द्र तक पहुँची। मरते वृक्ष के लिए अपने प्राण दे रहे तोते को देखने के लिए इन्द्र स्वयं वहाँ आए।

धर्मात्मा तोते ने उन्हें पहली नजर में ही पहचान लिया।इन्द्र ने कहा,देखो भाई इस पेड़ पर न पत्ते हैं, न फूल,न फल।अब इसके दोबारा हरे होने की कौन कहे,बचने की भी कोई उम्मीद नहीं है।जंगल में कई ऐसे पेड़ हैं,जिनके बड़े-बड़े कोटर पत्तों से ढके हैं।पेड़ फल-फूल से भी लदे हैं।वहाँ से सरोवर भी पास है।तुम इस पेड़ पर क्या कर रहे हो,वहाँ क्यों नहीं चले जाते ?तोते ने जवाब दिया,देवराज,मैं इसी पर जन्मा,इसी पर बढ़ा,इसके मीठे फल खाए।इसने मुझे दुश्मनों से कई बार बचाया। इसके साथ मैंने सुख भोगे हैं।आज इस पर बुरा वक्त आया तो मैं अपने सुख के लिए इसे त्याग दूँ।जिसके साथ सुख भोगे,दुख भी उसके साथ भोगूँगा,मुझे इसमें आनन्द है।आप देवता होकर भी मुझे ऐसी बुरी सलाह क्यों दे रहे हैं ?' यह कह कर तोते ने तो जैसे इन्द्र की बोलती ही बन्द कर दी।तोते की दो-टूक सुन कर इन्द्र प्रसन्न हुए,बोल,मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।कोई वर मांग लो।तोता बोला,मेरे इस प्यारे पेड़ को पहले की तरह ही हरा-भरा कर दीजिए।देवराज ने पेड़ को न सिर्फ अमृत से सींच दिया,बल्कि उस पर अमृत बरसाया भी।पेड़ में नई कोपलें फूटीं।वह पहले की तरह हरा हो गया,उसमें खूब फल भी लग गए।तोता उस पर बहुत दिनों तक रहा,मरने के बाद देवलोक को चला गया।

युधिष्ठिर को यह कथा सुना कर भीष्म बोले,अपने आश्रयदाता के दुख को जो अपना दुख समझता है,उसके कष्ट मिटाने स्वयं ईश्वर आते हैं।बुरे वक्त में व्यक्ति भावनात्मक रूप से कमजोर हो जाता है। जो उस समय उसका साथ देता है,उसके लिए वह अपने प्राणों की बाजी लगा देता है।किसी के सुख के साथी बनो न बनो,दुख के साथी जरूर बनो।यही धर्मनीति है और कूटनीति भी

कविता

ख्वाहिश नहीं, मुझे, मशहूर होने की,
आप मुझे "पहचानते" हो, बस इतना ही "काफी" है।
अच्छे ने अच्छा और, बुरे ने बुरा "जाना" मुझे,
जिसकी जितनी "जरूरत" थी, उसने उतना ही "पहचाना "मुझे!
जिन्दगी का "फलसफा" भी कितना अजीब है,
"शामें "कटती नहीं और, "साल" गुजरते चले जा रहे हैं!
एक अजीब सी, 'दौड़' है ये जिन्दगी,
"जीत" जाओ तो कई,अपने "पीछे छूट" जाते हैं और
हार जाओ तो, अपने ही "पीछे छोड़ "जाते हैं!
बैठ जाता हूँ, मिट्टी पे अक्सर,
मुझे अपनी"औकात" अच्छी लगती है।
मैंने समंदर से "सीखा "है जीने का तरीका,
चुपचाप से "बहना "और,अपनी "मौज" में रहना।
एक "घड़ी" खरीदकर, हाथ में क्या बाँध ली,
"वक्त" पीछे ही पड़ गया मेरे!
सोचा था घर बनाकर बैठूँगा "सुकून" से,
पर घर की जरूरतों ने"मुसाफिर" बना डाला मुझे!
जीवन की "भागदौड़" में क्यूँ वक्त के साथ, "रंगत "खो जाती है ?
हँसती-खेलती जिन्दगी भी आम हो जाती है!
एक सबेरा था जब "हँसकर "उठते थे हम,
और आज कई बार, बिना मुस्कुराए ही "शाम" हो जाती है!

कितने "दूर" निकल गए रिश्तों को निभाते-निभाते,
खुद को "खो" दिया हमने अपनों को "पाते-पाते"।
लोग कहते हैं हम "मुस्कुराते "बहुत हैं,
और हम थक गए "दर्द छुपाते-छुपाते"!
खुश हूँ और सबको "खुश "रखता हूँ,
"लापरवाह" हूँ ख़ुद के लिए मगर सबकी "परवाह" करता हूँ।
मालूम है कोई मोल नहीं है "मेरा" फिर भी
कुछ "अनमोल" लोगों से "रिश्ते" रखता हूँ।

संकलन : हेमचंद

पहेलियाँ

उत्तर :-1-बिच्छू 2. हरी इलायची 3.पुस्तक ४. कमल 5. लैटर बाक्स 6. सूरजमुखी का फूल

चुटकले

1. दोस्त – अच्छा बता चावल से बर्फ कैसे बनायें
दूसरा – पता नहीं तू बता
दोस्त – अबे RICE में से 'R' निकाल दे
बन गया ICE □ :p
2. पप्पू का रेलवे इंटरव्यू
पप्पू रेलवे में इंटरव्यू देने गया ,
बॉस -अगर दो ट्रेन एक ही पटरी पर आमने सामने आ रहीं हो तो क्या करोगे ,
पप्पू – लाल झंडा दिखा दूंगा ,
बॉस – अगर झंडा नहीं मिला तो ,
पप्पू – तो टोर्च दिखा दूंगा ,
बॉस – अगर टॉर्च भी न मिली तो ?
पप्पू- अपनी लाल शर्ट उतार कर दिखा दूँगा ,
बॉस- और तुम्हारी शर्ट भी लाल ना हो तो ?

पप्पू- तो मैं अपनी बुआ के लड़के को फ़ोन करके बुलाऊंगा ,
बॉस – वो क्यों ?
पप्पू – क्यूंकि उसने कभी 2 ट्रेनों की टक्कर नहीं देखी …

उत्कृष्ट उपलब्धि

भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर नोएडा के भैया कृष्णा कुमार यादव ने जेईई मेन -2023 की परीक्षा में 96.7 परसेंटाइल अंक प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया ।इस अवसर पर भैया कृष्णा को बधाई देते हुए प्रधानाचार्य श्रीमान पंकज शर्मा जी, श्रीमान राजेश कुशवाहा जी ,श्रीमान अक्षय कुशवाहा जी एवं कोऑर्डिनेटर श्रीमती नीतू सिंह ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

अतिथि उद्बोधन

आज हमारे विद्यालय की वंदना सत्र में माननीय श्री सतेंद्र जी का आगमन हुआ जिनके द्वारा सभी भैया - बहनों को जीवन में सदैव अग्रसर रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी गई।

अपने लक्ष्य के प्रति एक पूर्व निर्धारित योजना का निर्माण करने के लिए अभिप्रेरित किया। सफलता प्राप्त करने हेतु उद्देश्य तथा जागृत अवस्था में लक्ष्य का निर्माण करना। ऐसे मूलभूत उद्देश्यों को अपने जीवन में प्रयोग करना तथा उसके प्रति एक प्रारूप का निर्माण करना। जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें सदैव अपने अभिभावक तथा गुरुओं की आज्ञा पालन करते हुए कार्यों को करना चाहिए।